संरक्षक—श्रीयुत हरगोविंददास रामजी शाह—मुंबई

॥ अर्हम् ॥

॥ णमो त्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

भाग १] # जैन [अंक

साहित्य संशोधक

जैन इतिहास, साहित्य, तत्त्वज्ञान आदि विषयक विविध निबन्ध-संग्रह ।

संपादक
मुनिराज श्रीजिनविजयजी ।

प्रकाशक—
जैन साहित्य संशोधक समाज ।
ठि० भारत जैन विद्यालय, फर्गुसन कालेज रोड, पूना सिटी ।

वार्षिक मूल्य ५ रु०] [प्रतिअंक मूल्य १॥ रु०

विषय-सूचि।

(हिन्दी लेख विभाग)

१ जैनेन्द्र व्याकरण और आचार्य देवनन्दी। लेखक—श्रीयुत पं. नाथूरामजी प्रेमी, संपादक—जैनहितैषी ६१-८७
२ गन्धहस्ति महाभाष्यकी खोज—ले० श्रीयुत बाबू जुगल किशोरजी मुख्तार ... ८८-९५
३ तीर्थयात्राके लिये निकलनेवाले संघोंका वर्णन (सम्पादकीय) ९६-१०७
४ जेसलमेरके पटवोंके संघका वर्णन (सम्पादकीय) १०७-११२
५ शोकसमाचार.
(१) डॉ० सतीशचन्द्र विद्याभूषण ... ११३
(२) प्रो० सी. वी. राजवाडे ११४
(३) लो० बाल गंगाधर तिलक ... ११५
६ चित्र परिचय ११६

(गुजराती लेख विभाग)

१ सोमप्रभाचार्य विरचित कुमारपाल प्रतिबोध (सम्पादकीय) ५७-६८
२ डॉ० हर्मन जेकोबीनी जैनसूत्रोनी प्रस्तावना अनुवादक—शाह अम्बालाल चतुरभाई, बी. ए. (जैन सा. सं. कार्यालय तरफथी) ६९
३ साहित्य-समालोचन
(१) धनपालकृत भविष्यदत्तकथा ... ९७
(२) सूरीश्वर अने सम्राट् ९८
(३) तत्त्वार्थसूत्रविशिष्टनुं भाषान्तर ... १००
—मुंबई युनिवर्सिटीना एम्. ए. क्लासनो अर्धमागधी कोर्स १०३
—पंजाब युनिवर्सिटीमां जैनसाहित्य १०४

बृहट्टिप्पनिका नाम प्राचीन जैनग्रन्थसूची।

अवश्य पढिए

जैन साहित्य संशोधक समाजकी तरफसे शीघ्र ही एक जैन प्राकृत-संस्कृत ग्रन्थमाला निकलनेवाली है जिसमें जैन साहित्यके उत्तमोत्तम, प्राचीन और अलभ्य-दुर्लभ ग्रन्थ प्रकट किये जायेंगे। इन ग्रन्थोंमें जैन आगम, सूत्र, निर्युक्ति, चूर्णि, भाष्य, वृत्ति, न्याय, व्याकरण, काव्य, कोष, साहित्य, अलंकार, चरित्र, पुराण, प्रबन्ध इत्यादि सब प्रकारके ग्रंथ रहेंगे। ये सब ग्रन्थ नई पद्धतिसे, जैन और अजैन विद्वानोंके द्वारा संपादित हो कर छपेंगे। जैन साहित्यके देखनेकी अभिरुचि लोकोंमें दिन पर दिन बढती जा रही है परन्तु एक तो अभी तक उत्तम प्रकारसे जैन ग्रन्थ छपे ही नहीं हैं और जो जैसे वैसे छपे हैं उनकी प्राप्ति भी सर्व साधारणके लिये दुःसाध्य ही नहीं परंत असाध्य हो रही है। इस लिये अनेक विद्वानोंके आग्रहसे इस संस्थाने यह काम करनेका विचार किया है।

जो सज्जन इस ग्रन्थमालाके स्थायी ग्राहक बनना चाहेंगे उन्हें सब ग्रन्थ पौनी किंमतसे याने ३/४ मूल्यमें दिये जायेंगे। स्थायी ग्राहक बननेके लिये १ रुपया प्रथम प्रवेश फीके लिये भेजना चाहिए। ग्रंथ ज्यों ज्यों छपते जायेंगे त्यों त्यों वी. पी. करके भेजे जायेंगे।

कागज, साईज, छपाई, सफाई इत्यादि सब काम उत्तम प्रकारका होगा। विशेष हाल जाननेके लिये जवाबी पत्रद्वारा पूछिए।

पत्रव्यवहार करनेका पता—

व्यवस्थापक
जैन साहित्य संशोधक कार्यालय,
C/o भारत-जैन विद्यालय,
पूना-सीटी.